भेड़ कलैन्डर

भेड़ों से अधिकतम लाभ लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी प्रबन्ध प्रणाली मौसम अनुसार बदली जाए 1 मेंमनों का जन्म उस समय होना चाहिए जब भेड़ों के लिए चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो इससे भेड़ों का दूध उत्पादन अधिक होगा जिसका असर मेंमनों की बढ़ोतरी तथा मृत्युदर पर पड़ता है 1

भेड़ पालन से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए भेड़ पालक को वर्ष भर उत्पन्न होने वाले चारे, मौसम व उसका भेड़ पालन पर होने वाले असर का ज्ञान होना चाहिए 1

ऋतु अनुसार वर्ष भर किये जाने वाले भेड़ पालन कार्यो को पांच भागों में बांटा जा सकता हे 1

1 बसन्त ऋतु (फरवरी मार्च) :- इस समय न तो अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी 1 सर्दी ऋतु के बाद थोड़ी-थोड़ी घास भी उगने लगती है 1 इसके अतिरिक्त फसल काटने के उपरान्त खेत में बची/गिरी फसल भेड़ों को मिलती है 1 इसके साथ ही भेड़ें गर्मी में आनी शुरू होती है 1 इस मौसम में भेड़ों को एटेरोटोक्सीमिया का रोग होने लगता है 1 इस समय भेड़ों को इस रोग से बचाव का टीका अपने नजदीगी पशु चिकित्सा संस्थान से लगवा लेना चाहिए 1 ऊन कतरने के आठ दस दिन बाद जब उनके शरीर पर कोई घाव न रहे तो वाह्य परजीवी कीटाणुनाशक घोल से नहला देना चाहिए 1 ऐसा करने से चिचड़ें, जूं इत्यादि मर जाते है 1

2 गर्मी (अप्रैल-जून) :- इस मौसम में चारा सूखने लगता है परन्तु भेड़ें गेहूं व जौ के कटे खेतों में चराई कर अपना निर्वाह कर लेती है 1 कुछ इलाकों में बबूल की पत्तियां भी भोजन का अच्छा साधन बन जाती हैं जिन्हें खाकर वे गर्मी में आती है 1 इस मौसम में चराई के साथ-2 भेड़ों को प्रत्यामिन पूरक भी देना चाहिए 1

3 बर्षा ऋतु (जुलाई व अगस्त):- वर्षा के साथ ही घास उगती है जिसे खा कर भेड़ों का वज़न बढ़ने लगता है 1 यह बढ़ोतरी चरने के लिए अच्छा चारा मिलने तथा पेट में बच्चा होने के कारण होती है 1 वर्षा के अन्त में मैमने पैदा होने लगते है 1 इस मौसम में भेड़ों को आन्त्रकृमियों से बचाने के लिए दवाई पिलाएं तथा खुरगलन रोग (एफ एम डी) व पी0पी0आर0 रोग से उनकी रक्षा करने के लिए टीका करण करवाएं 1

4 पतझड़ ऋतु (सितम्बर व अक्तूबर):- भेड़ों की ऊन कतरने का काम शुरू हो जाता है 1 इसी समय निकृष्ट भेड़ों को छांट कर अलग किया जा सकता है पतझड़ में मैमने पैदा होने शुरू हो जाते है और बची हुई भेड़े ग्याभिन हो जातीं है 1 नर मेमनों का बधियाकरण भी इसी समय करवाया जाता है 1 मक्का आदि कटने से भेड़ों को पर्याप्त भोजन मिल जाता है 1 पहाड़ों में चरने गई भेड़ें चराई के बाद नीचले इलाकों में आने लग जाती है 1

5 सर्दी ऋतु (नवम्बर–जनवरी) :– इस मौसम में घास सूखने लगती है 1 और घास की कमी हो जाती है 1 भेड़ों को सूखी घास देनी चाहिए 1 मेमनों को सर्दी से बचाना चाहिए तथा अन्त कृमी नाशक दवाई पिलानी चाहिए 1

संसार की भेड़ें

भेड़ों से मनुष्य को सदियों से भोजन व कपड़ा मिलता आ रहा है 1 टिकाऊ और गर्म कपड़े बनाने के लिए अभी तक और दूसरी ऐसी वस्तु नहीं निकली है जिसे ऊन के स्थान पर काम में लाया जा सके 1 बुरे और अच्छे समय में जब भी मनुष्य विभिन्न प्रदेशों में जा कर बसा, उस समय उसके पौष्टिक भोजन का मुख्य साधन भेड़ेंह ी रही है 1 भेड़ बकरियों की तरह पेड़ की बढ़वार को कोई हानि नहीं पहुंचाती है 1 भेड़ की मेगनियों से भूमि उपजाऊ बनती है और इसका प्रभाव भूमि में काफी समय तक रहता है 1 जहां कहीं भेड़ों का अच्छा पालन पोषण और देखभाल की जाती है वहां कृषि की उन्नति हुई है, और भेड़ों के सुनहरे खुर ऐसी भूमि के लिए सौभाग्यशाली सिद्व हुए है 1

पालतू पशुओं में कुते को छोड़ कर और कोई पशु ऐसा नही है जो विभिन्न जलवायु में इतनी ज्यादा संख्या में पाया जाता हो, जितनी कि भेड़ 1 अनुमान लगाया जाता है कि संसार में भेड़ की 200 नस्लें हैं तथा संसार की विभिन्न भेड़ की नस्लों को चार मुख्य वगों में बाटां जा सकता हे 1

1 बारीक ऊन वाली मेरिनों और उसकी वंशज भेड़े 1
2 यूरोपीय और ब्रिटिश देशों की मध्यम ऊन वाली भेड़ें 1
3 ब्रिटेन की बड़ी चमकदार ऊन वाली भेड़े और
4 ऐशियाई इेशों की कालीन जैसी ऊन वाली भेड़ें 1

कुछ महत्वपूर्ण विदेशी नस्लें जिन का उपयोग हिमाचल प्रदेश में भी स्थानीय नस्लों के सुधार के लिए किया गया, इस प्रकार की है :

विदेशी नस्लें :

1 रेम्बोलेट या फ्रेंचमेरीनो:- ससांर के सभी देशों की उन्नत भेड़ों में रेम्बोलेट रक्त का महत्वपूर्ण योगदान है 1 क्योंकि ये भेड़ें गोश्त और ऊन दोनों के लिए विकसित की गई है 1

रेम्बोलेट मजबूत और भारी हड्डियों वाली भेड़ है 1 सिर बहुधा उंचा रखती है 1 ये तेज होती है तथा इसके शरीर में काफी चौड़ाई और कहराई होती है और इसका वनज भी काफी होता है 1 शरीर सीधा होता है 1 पसलियां खूब उठी और भरी हुई होती है पैर अच्छे सधे हुए और मजबूत होते हैं और ये काफी दूर चल सकती हैं 1

अमेरिका की जलवायु में रेम्बोलेट नर-भेड़ों से औसतन 15 से 25 पौंड और मादा से 10 से 18 पौंड तक ऊन प्राप्त होता है 1 ऊन का रेशा 12 महीनें में 2.3ष- 3ष तक लम्बा हो जाता है 1

2 पोलवर्थ :- इस नस्ल की उत्पति 1880 में आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रान्त स्थित टार्डनथार्न कूड नामक स्थान पर हुई 1 पोल बर्थ नस्ल की भेड़ों मे 3/4 रक्त मेरीनो ओर 1/4 रक्त लिंकन नस्लों का है 1 इस नस्ल को विकसित करने वाले प्रजनन वैज्ञानिकों का उद्देश

संभवत् ऐसी भेड़ें पैदा करना था जो ऐसे जलवायु में भली भंति पनप सकें जो मेरीनो भेड़ों के लिए बहुत नम व ठण्डा था 1

इन भेड़ों के आकर में काफी एकरूपता होती है तथा इसकी ऊन काफी घनी और 58 काउन्ट की होती है 1 ऊन मे रेशे की लम्बाई वर्ष भर में बढकर 4 ईंच तक हो जाती है 1 आंखें स्वच्छ, चेहरा मुलायम और हल्का गुलाबी होता है 1 कुछ भेड़ों के सीग होते है और कुछ सींग रहित भी होती है 1

3 कारीडेल :- यह अपेक्षा कृत नई नस्ल है 1 इसकी उत्पति सर्वप्रथम न्यूजीलैंड में और फिर आस्ट्रेलिया में हुई 1 इस नस्ल में दोनो गुण मौजूद है अर्थात यह ऊन तथा गोश्त दोनों के लिए अच्छी रहती है 1 यह संकर नस्ल, लम्बी ऊन वाली भेड़ों और मेरीनों कें संयोग से उत्पन्न हुई 1 न्यूजीलैंड में यह नस्ल सन 1874 में तैयार की गई तथा आस्ट्रेलिया के विक्टारिया प्राप्त में 1882 में 1

कारीडेल में दोनों गुणों का समावेश है अर्थात इससे एक वर्ष में प्रति भेड़ औसतन 10 पौंड ऊन मिल जाती है जो 50-58 काउन्ट का होती है 1 इस नस्ल में ज्यादातर जुड़वा मेमने पैदा होते है तथा यहां तुलनात्मक रूप से तगड़ी होती है 1

भारत की भेड़े

भारत में भेड़ पालन सदियों से किया जाता है और अच्छी आय का साधन भी है 1 भेड़ की आबादी के मामले में भारत विश्व के छठे स्थान पर है 1 हमारे देश में लगभग 4.50 करोड़ भेड़े पाई जाती है 1 भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत के भेड़ पालक क्षेत्रों को निम्नलिखित तीन विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है 1

1 समशीतोष्ण हिमालय प्रदेश जिसमें कश्मीर, हि0प्र0, पंजाब व उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिले शामिल है 1 इन क्षेत्रों के भेड़ पालक सर्दियों में भेड़ों को निचले स्थानों में ले आतें है और गर्मियों में ऊंचे स्थानों पर चले जाते है 1 इन भेड़ों से अच्छी किस्म की ऊन प्राप्त होती है जो कि गर्म कपड़े बनाने के काम आती है 1 इस क्षेत्र की प्रमुख नस्लें है 1 गद्दी, रामपुर बुशैहर, बकरवाल और गुरेज 1

2 खुश्क पश्चिमी प्रदेश जिसमें राजस्थान, दक्षिण पूर्व, पंजाब, गुजरात व पश्चिम उतर प्रदेश के कुछ इलाके शामिल है 1 इस क्षेत्र की भेड़ों की ऊन का रेशा मोटा होता है तथा यह मुख्यत: कालीन, गलीचे आदि बनाने के काम आता है 1 कालीन बनाने के लिए भारत से बाहर भेजी जाने वाली कुल ऊन का तिहाई भाग राजस्थान की भेड़ों से प्राप्त होता है 1 इस क्षेत्र में पाई जाने वाली भेड़ों की खास नस्लें है :- चोकला, मोगरा, मारवाड़ी, नाली आदि 1

3 दक्षिणी प्रदेश : विंध्य पहाड़ों से ले कर नीलगीरी तक फैले हुए दक्षिणी प्रदेशों में भेड़ों का घनत्व उत्तर भारत के मैदानों की अपेक्षा अधिक है आम तौर पर इस क्षेत्र की भेड़ों की ऊन मुख्य रूप से काले और भूरे रंग की होती है तथा अच्छी किस्म की नहीं होती 1 मान्डया नस्ल की भेड़े मांस के लिए प्रसिद्व है 1 इस क्षेत्र में पाई जाने वाली नस्ले इस प्रकार है 1) दक्कनी 2) नेलोर 3) बेलरी 4) मान्डया 1

हिमाचल प्रदेश की भेड़ें

हिमाचल प्रदेश भेड़ की दो स्थानीय नस्लों - गद्दी व रामपुर बुशैहर के लिए विश्व विख्यात है 1

1) गद्दी :- भेड़ की यह प्रजाति प्रदेश के कांगड़ा व चम्बा जिले में रहने वाले एक समुदाय जिसे 'गद्दी' कहतें है से अपना नाम लेती है 1 गद्दी नस्ल की भेड़े मध्यम आकार की होती है तथा दनकी टांगें बहुत मजबुत होती है तथा ये भेड़ें लम्बी यात्राएं आसानी से पूरी कर लेती है इनसे प्राप्त ऊन 26 माइक्रोन की होती है तथा 6 महीनों में ऊन के रेशे की लम्बाई 7-10 से0मी0 हो जाती है 1

2) रामपुर बुशैहर:- यह नस्ल जिला शिमला, कुल्लू, सोलन ब उत्तर प्रदेश की चकरता पहाड़ियों में पाली जाती है 1 इस नस्ल की भेड़ें 22-32 कि0ग्राम तथा मेढ़ें 36-45 कि0ग्रा0 तक वनज के होते है 1 इस भेड़ से प्राप्त होने वाली ऊन मुलायम तथा 26-30 माइक्रोन मोटाई वाली होती है 1 छ: महीने में ऊन का रेशा 7-10 सै0मी0 लम्बा हो जाता है 1

हि0प्र0 में जिलावार भेड़ों की संख्या
जनगणना 2003

क्रम संख्या	**जिला**	**भेड़ों की सख्यां**
1	बिलासपुर	2994
2	चम्बा	2,81,368
3	हमीरपुर	17,911
4	कांगड़ा	1,07,627
5	किन्नौर	74,386
6	कुल्लू	1,29,84
7	लाहोलस्पिति	41,449
8	मण्डी	1ए29844
9	शिमला	98,376
10	सिरमौर	17,788
11	सोलन	4,313
12	ऊना	159
	कुल	**9.06 लाख**

हि0 प्र0 में नस्ल सुधार अभियान

सबसे पहली बार 1933 में ;प्उचमतपंस ब्वनदजबपस वि लों ।हतपबनसजनतमद्ध की उप समिति ने सिफारिश की कि हमारे देश में ऊन से जुड़े उद्योगों की बढ़ोतरी के लिए यहां पर कुछ एक स्थानीय नस्लों का सुधार किया जाना चाहिए और गद्दी नस्ल इनमें से एक थी इसके लिए नस्ल सुधार के अन्तर्गत इस उप समिति ने सिफारिश की कि स्थानीय प्रजातियों जैसे गद्दी नस्ल का बाहर के देशों की अच्छी ऊन देने वाली नस्लों जैस त्नेपंद

डमतपदव व रेम्बूलैट से इसका प्रजनन करवाना चाहिए ताकि ऊन की किस्म व पैदावार में बढोतरी हो सकें 1 सएसे पहली बार 1956-57 में आस्ट्रेलिया से च्वसूवतजी भेड्डुओं का आयात किया गया ताकि नस्ल में सुधार किया जाए 1 इसके लिए यहां की लोकल नस्ल का प्रजनन कई बार बाहर की नस्लो च्वसूवतजीए ब्ंनबेंपंदए ैबवजजपी ठसंबा बिमए ब्वततपमकंसम व जर्मन मेरीनों से करवाया व भरसक प्रयत्नों के बाद केवल त्ंइवनपससमज व रशियन मेरीनों को चुना गया क्योंकि ये नस्लें प्रदेश की नस्लों में तन्दरूस्त पायी गई

इसी दिशा में प्रदेश सरकार ने आगे कदम बढाते हुए पांच भेड़ प्रजनन फार्म, कड़छम, ज्यूरी, सरोल, ताल ;हमीरपुर 2003द्ध व रैम सेन्टर नगवांई में खोले जो कि रेम्बोलेट व रशियन मेरीनों के भूडू तैयार करके भेड़ पालकों को देने लगे ताकि नस्ल सुधार किया जाए 1 इन फार्मो से काफी तादाद में भेडू, भेडद्व पालकों को मुहैया करवाये जाते है व वूल फैडरेशन ने इस दिशा में पिछले कुछ एक सालों मे भेडू बांटे 1

क्रास ब्रीडिंग का असरः- 1960 के दशक से क्रास ब्रीडिंग का कार्यक्रम चल रहा है और उससे प्रदेश में ऊन की पैदावार में बढ़ोतरी हुई 1 परन्तु हम इसका मुकाबला जम्मू और कश्मीर से करें तो हम अभी भी काफी पीछे हैं क्योंकि वहां पर लगभग 3/4 भेड़ मैरिनों किस्म की है व एक भेड़ लगभग 2-3 किलो ऊन प्रतिवर्ष देती है 1

हि0 प्र0 में भेड प्रजनन नीति

स्थानीय नस्लों की ऊन उत्पाइकता व ऊन गुणवत्ता बढाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा निम्नलिखित भेड प्रजनन नीति अपनाई जा रही है :-

1 देशी नस्ल की मादा का शुद्व विदेशी नस्ल के मैढे से प्रजनन करवाने के पश्चात् पहली पीढी में जो सन्तान उत्पन्न होती है उसमें 50 प्रतिशत देशी नस्ल के गुण तथा 50 प्रतिशत विदेशी नस्ल के गुण होते है 1

2 पहली पीढी में पैदा हुई 50 प्रतिशत विदेशी व 50 प्रतिशत देशी नस्ल की मादा का प्रजनन विदेशी नस्ल के शुद्व मैंढे से करवाने के उपरान्त दूसरी पीढी की संतान में 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के गुण तथा 25 प्रतिशत देशी नस्ल के गुण होते है 1

3 इसके पश्चात् की पीढियों मे 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के गुण कायम रखने के लिए 75 प्रतिशत विदेशी के गुणों वाली मादा का प्रजनन 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के गुण वाले मैंढे से ही करवाना होगा 1

प्रजनन नीति को अपनाते समय निन्म बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है :-

पहली पीढी में विदेशी नस्ल का जो मैंढा प्रजनन के लिए प्रयोग में लाया गया था उसे दूसरी पीढी में पैदा हुई सन्तान के साथा प्रजनन के लिए प्रयोग में नहीं लाना चाहिए 1 इसी प्रकार 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के मैढे को जिसे एक पीढी में प्रजनन हेतू प्रयोग में लाया गया है, उस पीढी में पैदा हुई संतान के साथ प्रजनन में नहीं लाना चाहिए 1

एक ही मैढे को बार-2 कई पीढियों में पैदा हुई संतान के साथ प्रजनन करवाने से अन्त: प्रजनन का खतरा पैदा हो जाता है 1 अन्त: प्रजनन के फलस्वरूप पशुओं में उत्पादन क्षमता की कमी तथा कई प्रकार के शारीरिक विकार पैदा हो जाते हैं 1 इसलिए प्रजनन नीति को सही प्रकार से अपनाकर ही नस्ल सुधान के लाभदायक उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है 1

भेड़ों का जीवन

भेड़ जुगाली करने वाला छोडा पशु है 1 यह घास पात खाता है जिससे ऊन व मांस बनता है 1 सामान्यत: भारी वर्षा भेड़ों के लिए अच्छी नहीं होती 1 खुश्क व कम वर्षा के साथ ठण्डा जलवायु भेड़ों को स्वस्थ रखने में सहायक होता है 1 भेड़े कीचड़ आदि पसन्द नहीं करती 1 भेड़ों में अपने मालिक के पीछे-2 चलने की स्वाभाविक आदत होती है और भेड़ पालक खेतों और चारागाहों में उनको इकट्ठा करने में उनकी इस आदत का लाभ उठाते हैं 1

आयु एवं उपयोगिता :- भेड़ की सामान्य आयु 10-12 साल समझी जाती है, परन्तु मेढ़े या भेड़े किस आयु तक उपयोगी रहती है यह उनकी नस्ल और हाट की परिस्थितियों पर निर्भर करता है

भेड़ पालन से लाभ उठाने के लिए ध्यान देने योग्य बातें :-

1 यदि भेड़ पालन से लाभ उठाना हो तो भेड़पालक को आवश्यकता से अधिक ऐसे सब मेढे व भेड़े बेच देने चाहिए जो नियमित रूप से बच्चे नही देती या जिनका ऊन उत्पादन कम हो गया है 1

2 30-40 भेड़ों को प्रजनन के लिए एक मेढ़ा काफी है इसलिए साल में पैदा हुए नर मेमनों मे सं प्रजनन के लिए आवश्यक एक मेमने को रखने के बाद बाकी सभी मेमनों को मांस के लिए बेच देना चाहिए 1

3 नर मेमनों को उस समय बेचना फायदे मंद होता है जब उन्होनें मां का दूध पीना छोड़ दिया हो और वे पूरे वढ़ चुके हों, परन्तु उनकी आयु प्रजनन योग्य न हों 1

4 यह बात विशेष रूप से याद रखनी चाहिए कि भेड़ों को ऊन व मांस उत्पादन के लिए पाला जाता है इसलिए एक अच्छा भेड़ पालक इस बात का ध्यान रखेगा कि भेड़े अच्छी पैदा हों और उन्हें बेकार मरने न दे कर, मांस के रूप में काम लाया जाए 1

भेड़ की आयु

भेड़ों की औसत आयु 10 से 12 वर्ष तक होती है परन्तु रेवड़ में 6 वर्ष की आयु के पश्चात् उनकी उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है 1 भेड़ों की आयु का अनुमान उनके दांतो की संख्या व उनकी दशा से लगाया जा सकता है 1 वयस्क भेड़ों में आठ दांत ओर 24 इाढे होती है 1 दांत केवल निचले जवड़े में होते है जबकि ऊपर का जवड़ा सख्त चिकने मांस का होता है 1 मेमनों के आगे के आठ दांत काटने वाले होते है और ये दांत पैदा होने के बाद पहले एक-दो माह में ही निकल जाते हैं 1 कुछ मेमनों के दांत पैदा होने के समय भी उपस्थित रहते हैं 1 मेमनों के दांत अस्थई प्रकार के होते हैं जिन्हे दूध के दांत कहते हैं 1 दूध के दांत 11-12 माह की आयु से ठूटने लगते है और पहले दो बीच के दूध के दांत के स्थान पर बड़े और गोल पक्के दांत निकल आते हैं जो स्थई प्रकार के कतरन दांत होते हैं इस अवस्था में भेड़ की आयु 13 से 14 माह की होती है 1 जैसे जैसे भेड़ बड़ी होने लगती है वैसे वैसे दो आगे के पक्के दांतों के दोनों तरफ के दूध के दांत गिर जाते हैं एवं इनके स्थान पर दो पक्के दांत निकल आते हैं 1 जब चार पक्के दांत निकल आते हैं तो उस समय भेड़ की आयु करीब दो वर्ष होती है 1 तीन से साढ़े तीन वर्ष की आयु तक छः पक्के दांत निकल आते हैं 1 भेड़ के आगे के आठ पक्के कतरन दांत निकलने पर पूरे दांत हो जाते है तथा इस समय भेड़ की आयु चार से साढ़े चार वर्ष होती है 1 उसके बाद भेड़ की लगभग आयु और उसकी उपयोगिता का निर्णय करने के लिए यह बात देखी जाती है कि उसके पहले दो दांत और बाद के पक्के दांत कितने घिसे हैं 1 दांतों की बनावट में परिवर्तन से भेड़ की आयु का अनुमान हो जाता है 1

भेड़ों के दांत कब तक ठीक व उपयोगी रहते है, यह ठीक से बताना कठिन है 1 साढे पांच से साढ़े छः वर्ष की आयु में दांत गिरने लगते है परन्तु कुछ भेड़ों में 8 से

10 वर्ष की आयु तक भी दांत ठीक रहते हैं 1 मसूड़े सिकुडने के कारण दांतों की जड़े दिखने लगती है 1 अत भेड़ के एक से अधिक कतरन दांत गिर जाएं तो उसे ब्रोकन माऊथ कहते हैं और जब सब दांत टूट जाएं तो उसे गमर कहते हैं इस प्रकार की भेड़ें ठीक से नहीं चर पाती जिससे वे अंत में कमजोर हो जाती है 1 इस अवस्था पर भेड़ों को रेवड़ से निकाल देना चाहिए 1

भेड़ों की आवास व्यवस्था

भेड़ों के लिए बहुत कीमती एवं विस्तारपूर्वक निर्मित घरों की आवश्यकता नहीं होती, उनके रहने के लिए साधारण, सूखे एवं स्वचछ बाड़े पर्याप्त होते है 1 अच्छे मौसम में रेवड़ के खुले स्थान पर भी रखा जाता है 1

उन्नत भेड़ पालन के लिए रेवड़ को सर्दी गर्मी एवं वर्षा से बचाने हेतु मौसम के अनुसार आवास व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है 1 अत: शुष्क एवं अर्घ शुष्क प्रदेशों में रेवड का बाड़ा जमीन से ऊंची व खुली जगह पर बनाना चाहिए ताकि इसमें वर्षा का पानी एकत्र न हो तथा हवा व प्रकाश का उचित प्रबन्ध हो सके 1

अर्ध खुला बाड़ा व्यवस्था भेड़ों के आवास की एक आदर्श व्यवस्था है इस व्यवस्था में ढके हुए स्थान के साथ साथ उसके दुगने अनुपात के बराबर खुली जगह साथ होती है 1 जिसमें पशु स्वेच्छानुसार घूम-घूम कर बाहर व भीतर आराम से रह सकते है 1 बाडा इतना बडा होना चाहिए कि प्रत्येक पशु को पर्याप्त (8-10 वर्ग फुट) स्थान प्राप्त हो सके 1 बाडे का आधा भाग छप्पर या एस्वेस्टस की चद्इरों से ढका होना चाहिए जिसको भेड़े सर्दी या वर्षा में उपयोग कर सकें 1 बाडे के आस पास चारों तरफ घने छाया दार वृक्ष जैसे अरडू नीम पीपल आदि लगाने चाहिए जो कि गर्मी के दिनों में बाड़े को ठण्डा रखने में मद्द करते है तथा साथ ही समय-समय पर चारे की आवश्यकता को भी पूरा करते है 1

बाड़े हेतु स्थान का चयन करते समय निन्मलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है 1

- बाड़ा बनाने का स्थान आम जगह से ऊंचा हो ताकि पानी के रूकने की सम्भावना न रहे 1
- बाड़े का स्थान खुला, हवादार हो ताकि अन्दर का वातावरण सॉ व सूखा रहे 1
- बाड़े में प्रकाश की उचित व्यवस्था होनी चाहिए 1
- बाड़े में पानी, दाना व चारे हेतु नांद/खुरली होनी चाहिए 1
- बाड़े में बच्चे, गाभीन और बीमार पशुओं के लिए अलग-2 व्यवस्था होनी चाहिए 1

बाड़े में निम्नलिखित जरूरी साधन व व्यवस्था होनी चाहिए 1

1 **पानी की नांद :-** भेड़ों के स्वेच्छानुसार पानी पीने के लिए पानी की नांद का होना आवश्यक है 1 भेड़ों को किटाणु रहित स्वच्छ पानी उपलब्ध करवाना चाहिए 1 नांद को समय-2 पर साफ करें तथा माह में एक बार पानी में चूना डाले ताकि पानी साफ रहे और भेड़ों को कैल्शियम मिले 1

2 **चारा, दाना हेतु पात्र** :- भेड़ों को चराई के अतिरिक्त बाड़े में भी चारा दाना देने की आवश्यकता होती है 1 चारे दाने के पात्रों को थोडी ऊचाई पर रखना चाहिए ताकि चारे दाने की हानि न हो व भेड़े उसमें मल मूत्र न कर सकें 1 एक व्यस्क भेड़ को खाने के लिए 40-50 सै0 मी0 व बच्चे के लिए 30-35 सै0मी0 स्थान की आवश्यकता होती है 1

3 **भण्डार गृह :-** भेड़ आवास के साथ-साथ भण्डार गृह होना भी आवश्यक है जिसमे चारा, दाना तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं रखी जा सके 1

4 **डिपिंग टैंक** :- बाड़े के आसपास भेड़ों को नहलाने के लिए जल कुण्ड (डिपिंग टैंक) का होना अति आवश्यक है जिससे कि भेड़ों को कम से कम वर्ष में दो बार नहलाया जा सके और उन्हें बाह्य परजीवियों से छुटकारा मिले 1

खुर स्नान :- बाड़े के प्रवेश द्वारा पर पांच फुट चौड़ा चार फुट लम्बा व छः इंच गहरा पक्का खुर स्नान का स्थान होना चाहिए जिसको वर्षा के पूर्व के दिनों मं दवा (नीला थोथा) के पानी से भरकर भेड़ों को उससे अन्दर व बाहर भेजना चाहिए जिससे खुर पकने की शिकायत दूर होगी 1

भेड़ों का आहार :-

भेड़ों को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है कि उनको पौष्टिक भोजन, पानी, नमक आदि नियमित रूप से समय पर मिलते रहें 1 रोगों से छुटकारा पाने के लिए इस बात का विशेष ध्यान रखने की जरूरत पड़ती है कि जो चारा या पानी भेड़ों को दिया जाए वह साफ सुथरा हो, इना और साबुत अनाज से बनाया जाए तथा उन्हे ऐसे चारागाहों में चरने हेतू न भेजा जाए जहां की घास उनके लिए अस्वास्थ्यकर हो 1

यदि अच्छी घास मिले तो भेड़े स्वयं ही पूरी तरह अपना पेट भर लेती है 1 यदि घास अच्छी न हो तो भेड़े कम खाती है 1 इसलिए समूचे वर्ष प्रयत्न यह होना चाहिए कि उनको अच्छा चारागाह मिलता रहे 1 यह तभी सम्भव है जब उन्हे चराने की व्यवस्था ठीक हो जाए 1 प्रयत्न यह होना चाहिए कि उन्हें दो तीन प्रकार की चारागाह उपलब्ध हो 1 चारागाहों को इतना अधिक न चराया जाए कि उससे पौधें ही नष्ट हो जाए 1 इसलिए चारे की अच्छी फसल उपलब्ध करवाने के लिए पौधों को पनपने के लिए उन्हे अंतर से चराया जाए1 यह तभी संभव है जब चारागाहों को बदलते रहें 1 कभी कभी चारागाह में घासों के पुररूत्थान के लिए यह भी आवश्यक हो जाता है कि उनमें बीज बनने दिया जाए, ताकि चारागाह में वे घासें बनी रहें 1 इसके अतिरिक्त चारागाहों में भेड़ों की संख्या वहां की घास और चारागाह को देखते हुए निर्धारित होनी चाहिए 1

भेड़ों को चरने का स्वाभाविक समय प्रातः या दोपहर के कुछ समय बाद है 1 बीच में भी भेड़े थोड़ा-2 चरती रहती है 1 इसलिए सीमित समय चारागाहों में रखना उचित नहीं है चारागाहों में भेड़ों को बहुत कम हांकना या भड़काना चाहिए 1

गर्भिन भेड़ व मेमने का खानपानः-

1 भेड़ को गर्भिन होने के दूसरे महीने से दाना देना आरम्भ कर देना चाहिए 1

2 दाना हमेशा शाम को देना चाहिए 1

3 दाने के साथ खनिज लवण भरपूर मात्रा में देना चाहिए 1
4 दाने की मात्रा धीरे-धीरे बढानी चाहिए 1
5 दाने का मिश्रण आसानी से उपलब्ध अनाजों से बनाना चाहिए 1
6 यदि जौ, जई तथा मक्का कनक आसानी से उपलब्ध है तो उन्हे (30:30:40) के अनुपात में मिलाकर निन्नलिखित मात्रा में दें 1

1 दूसरे महीने	-	50 ग्राम प्रतिदिन
2 तीसरे महीने	-	100 ग्राम प्रतिदिन
3 चौथे महीने	-	150 ग्राम प्रतिदिन
4 पांचवे महीने	-	200 ग्राम प्रतिदिन
5 छठे महीने	-	250 ग्राम प्रतिदिन

मेमनों को शुरूआत में निम्न मात्रा में दूध उपलबध करना चाहिए 1

1 पहले हफते	-	50 मि0ली0 दूध दिन में 6 बार
2 दूसरे हफते	-	120 मि0ली0 दूध दिन में 3 बार
3 दूसरी महीने	-	200 मि0ली0 दूध दिन में 2 बार
4 तीसरे महीने	-	100 मि0ली0 दूध दिन में 2 बार

मेमनों का वनज व पोषण :-

गर्भाधारण में उचित ढंग से खिलाने का प्रभाव निश्चित ही मेमनों के वनज, जीवनी शक्ति और बढ़ने की शक्ति तथा भेड़ के दूध पर पड़ता है 1 गर्भ में बच्चे का सबसे अधिक विकास गर्भवस्था के अन्तिम 6 या 8 सप्ताह में होता है 1 इस अवधि में यदि उन्हें उचित पोषण मिले, तो मेमने का वनज भी बढ़ता है और भेड़ के थनों में दूध की मात्रा भी 1 गर्भावस्था के अन्तिम चरण में जिन भेड़ों को उचित पोषण नहीं दिया जाए तो उनकी समूची दूध देने की अवधि में (12 से 13 सप्ताह तक 40 से 50 प्रतिशत) दूध कम होता है 1 बच्चे का जन्म होने के प्रथम 6 से 8 सप्ताह के अन्दर दूध की मात्रा पर उसकी 60-80 प्रतिशत बढ़ोतरी निर्भर करती है 1

पांच महीने के गर्भकाल में भेड़ों का शारीरिक वनज 7 किलो से 15 किलो तक बढ जाता है 1 यह वनज मेमने और अन्य सामग्री के कारण बढता है 1 बच्चा पैदा होने पर वनज घट कर पुराने स्तर पर आ जाता है, क्योंकि भेड़ों के लिए यह अवधि (लेक्टेशन) दूध देने और दूध पिलाने की नजर से गर्भावस्था की अपेक्षा अधिक कठिन होती है, इसलिए यह आवश्यक है कि दूध पिलाने की अवस्था में यदि मेमने को उचित मात्रा में दूध मिले तो उसके यथोचित विकास में सहायता मिलती है व मेमने की मृत्यु दर में अपेक्षाकृत कमी आती है 1

जहां तक संभव हो सके गर्भावस्था में भी भेड़ों को अच्छे चरागाहों और घासों पर रखना चाहिए 1 यदि मेमने बसन्त ऋतु में हो तो जाड़ों में उनको खने की कमी

हो जाती है 1 अत: उन्हें पेड़ों की पतियां, सुखी घास और फलीदान पतियां आदि अलग से खिलानी चाहिए 1 इस दौरान प्रोटीनयुक्त चारा इनके लिए अत्याधिक लाभदायक होता है 1 जहां कहीं सम्भव हो उन्हें मक्का, गेहूं, जई, लूर्सन आदि इस दौरान दी जा सकती है 1

जो भेड़ खास तौर से जाड़ों में बच्चा देती है उन्हें अतिरिक्त खाद्य की विशेष आवश्यकता होती है 1 वैसे गर्भावस्था के समय सभी भेड़ों को अतिरिक्त साबूत दाने की आवश्यकता पड़ती है 1 क्योंकि इस अवस्था में उन्हें अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए इस अवधि में उन्हें शक्ति प्रदान करने वाले खाद्यों की नितान्त आवश्यकता होती है 1 इसी दौरान भेड़ों की खुराक घट जाती है, इसलिए पौष्टिक तथा पाचक पदार्थो व सन्तुलित खाद्य की नितान्त आवश्यकता होती है 1 बच्चा होने के 1 से 1.5 माह पहले ही उन्हें इस प्रकार की खुराक देनी चाहिए 1

भेड़ प्रजनन

भेड़ों की प्रजनन आदतें :- दो साल की आयु में भेड़े पूरी जवान हो जाती हैं 1 परन्तु यह काल कुछ नस्ल और स्थान की भेडों का अलग होता है ऊन उत्पादन के लिएपाली गई नस्लों की युवा भेड़ों का प्रजनन 1.5 से 2 साल की आयु में करवाया जा सकता है 1 भेड़े एक साल मे एक मेमना पैदा करती है 1 कुछ ऐसी नस्ल की भेड़े भी होती है जो 14 महीने में दो बार बच्चे देती है 1 परन्तु हमारे देश में छोटी आयु की भेड़ों के जल्दी-2 बच्चे पैदा करवाने से भेड़ों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है 1 आम तौर से मेढों को एक वर्ष की आयु के बाद प्रजनन के लिए उपयोग में लाया जाता है 1 मेढे की प्रजनन शक्ति 2.5 से 7 साल की आयु तक चरम सीमा पर होती है 1 अच्छी प्रकार से रखा जाए तो मेढा 10 साल तक काम दे सकता है 1 भेड़ 17 दिन के बाद 30 घण्टे के लिए गर्मी में आती है 1 गर्मी के अन्तिम समय में मेढे से सम्पर्क करवाने पर गर्भाधान की अच्छी सम्भावनाए होती है 1

भेड़ों का गर्भ काल 142 से 152 दिन तक का होता है और औसतन यह 149 दिनों का होता है 1 भारत में साल में तीन मुख्य प्रजनन काल है

1 माच- अप्रैल या ग्रीष्म काल 1

2 जून-अगस्त या शरद् काल 1

3 अक्तूबर-नवम्बर या शीत काल 1

ग्रीष्म काल में भेड़ के गभिन होने पर मैमने अच्छे होते है क्योंकि गर्भ काल में भेड़ों को चरने के लिए काफी हरा घास होता है 1 एक ही काल में मेमने पेदा करना फायदेमंद है, ऐसा करने से मेमनों की ठीक प्रकार से देखभाल की जा सकती है 1

भेड़ों का चुनाव :- विशेष क्षेत्र के अनुकूल नस्ल का चुनाव करने के बाद भेड़पालक को यह निश्चय करना चाहिए ि कवह कितनी भेड़े पालना चाहता है 1 भेड़ों की संख्या इस बात पर निर्भर करता है कि भेड़ पालक कितने बड़े समूह का पालन पोषण अच्छी तरह से कर सकता है और उसके पास चरागाह की सुविधा कैसी है 1 नई भेड़े खरीदते समय भेड़ों का चुनाव सावधानी से करना चाहिए 1 कोई भी भेड़ पालक अस्थाई आर्थिक लाभ के लिए अपनी अच्छी भेड़े नही बेचेगा इसलिए दूध पीना छोडने के बाद मैमनों को खरीदना ही सबसे अच्दा रहता है 1 बैसे भी कम आयु वाली नई भेड़े अधिक आयु वाली प्रौढ भेड़ों की अपेक्षा जल्दी ही अपने आप को नई परिस्थिति में ढाल लेनी है 1 यदि व्यस्क भेड़ खरीदनी हो तो 2.5 से तीन वर्ष की आयु वाली या चार दांत वाली भेड़ों को चुनना अच्दा रहता है 1

मेढ़ों का चुनाव :

एक मेढ़ें से एक वर्ष में 30-40 भेड़ों का प्रजनन करवाया जा सकता है 1 एक अच्छे मेढ़े में विशेष नस्ल के सभी गुण मौजूद होने चाहिए और साथ ही उसे अपने ये गुण संतति में दे सकने योग्य भी होना चाहिए 1 मेढ़े को प्रजनन व आवकाश काल में कठोर जीवन व्यतीत कर सकने का अभ्यास होना चाहिए 1

प्रजनन के लिए चुने हुए मेढ़े की छाती चौड़ी शरीर गहरा, पसलियां सुगठित, कमर चौडी, पैर स्वस्थ होना चाहिए 1 स्वस्थ मेमने लेने के लिए युवा भेड़ों का प्रौढ मेढ़ों से तथा प्रौढ भेड़ों का युवा मेढ़ों से प्रजनन करवाना अच्छा रहता है 1

प्रजनन काल के दौरान मेढो को उचित खुराक खिलानी चाहिए क्योंकि इस समय अधिकांश मेढ़े ठीक प्रकास से घास चर नहीं पाते 1 मेढ़ों को स्वस्थ रखने के लिए अपने पास से बढ़िया चारा या अन्य पौष्टिक आहार खिलाना चाहिए 1

प्रजनन काल में मेढ़ों को छायादार ठडी जगह में रखें तथा उन्हें परजीवी कीड़े, चोट लगने व घाव से बचाएं 1 दो प्रजनन कालों के बाद मेढ़ा बदल लेना उचित रहता है 1

प्रजनन काल के समय ध्यान रखने योग्य बाते :

1 भेड़ की जननेन्द्रिय और पार्श्ववर्ती अंगों के चारों और से ऊन के गुच्छे काट देने चाहिए 1

2 भेडों को मेढे द्वारा गर्भित करने की तिथि नोट कर लेनी चाहिए 1

3 मेढों के खुरों को छांट देना चाहिए ताकि मादा भेड़ों को नुकसान न पहुंचे 1 अगर शरीर पर ज्यादा ऊन हो तो उसे भी काट देना चाहिए 1

4 भेड़ों के समूह में खस्सी मेढ़ों को रखना चाहिए 1 ऐसे मेढ़ों को दो समूहों में बांट कर उन मे से प्रत्येक को अदल बदल कर रात्रि के समय भेड़ों के साथ रखना चाहिए 1

अनुपयोगी भेड़ों की छंटनी

रेवड़ को अच्छा बनाये रखने के लिए उत्तम प्रबन्ध एवं स्वास्थ्य की व्यवस्था के साथ-साथ निकृष्ट भेड़ों को छाटंना भी अत्यन्त आवश्यक है 1 अधिक व उत्तम ऊन देने वाली कम भेड़ें, कम व मोटी ऊन देने वाली अधिक भेड़ों से अच्छी है 1 छटंनी का उत्तम समय वह है, जब उनकी ऊन कतरी जानी हो, क्योंकि ऊन कतरते समय उनकी ऊन के गुणों की जांच की जा सकती है और कतरन के बाद उनके शरीर की रचना की जांच भी हो जाती है 1

मेमनों को छाटते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए

1 उनके शरीर पर काले धब्बे न हों 1

2 वे अपनी नस्ल का प्रतिनिधित्व करते हों 1

3 उनकी टांगे टेढी न हों 1

4 वे किसी संक्रामक रोग से पीड़ित न हों 1
मेंढ़ों को छाटते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए :
1 उनकी आयु पांच-छः वर्ष से अधिक हो 1
2 उनकी वीर्य उच्च कोटि का न हो 1
3 उनका ऊन मोटी व वनज में कम उतरती हो 1
निम्न प्रकार की भेड़ों को रेवड़ में से निकाल देना लाभदायक रहता है :
1 जिनके शरीर पर ऊन समान रूप से न होती है 1
2 जिन भेड़ों की ऊन काली या काले धब्बे वाली हो 1
3 जिनके शरीर पर मोटे बाल हों 1
4 जिनके शरीर पर बहुत कम ऊन पैदा होती हों 1
5 जिनकी ऊन अधिक पीली हो 1
6 जिनकी ऊन का वनज रेवड़ की औसत वनज से कम हों 1
7 जिनके एक या दो स्तन खराब हों 1
8 जो कम दूध देती हो 1
9 जो अपनी नस्ल का प्रतिनिधितव न करती हो 1
10 जिनके कतरन दांत टूट या घिस गये हों 1
11 जिनका ऊपर या नीचे का जबड़ा बड़ा हो 1
12 जिनकी टांगें खराब हों 1
13 जिनके कन्धे कम चौड़े हों 1
14 जिनकी कोहनियां चलते समय आपस में भिड़ती हों 1
15 जिन भेड़ों में प्रजनन कार्य ठीक न हो 1

भेड़ प्रबन्ध में ध्यान देने योग्य बाते

1 शीतकाल में जब चारागाह में चारे की कमी हो जाती है तो भेड़ों को अलग से पूरक आहार (दाना) दिया जाना चाहिए तथा भेड़ों को अत्यधिक ठंड होने पर उनका बचाव करना चाहिए 1
2 प्रजनन से पहले अगर ऊन काट ली जाये तो प्रजनन कराने में सुविधा रहती है 1
3 ऊन काटने के 15 दिन बाद बाह्य परजीवी से बचाव हेतु भेड़ों की डिपिंग करवा देनी चाहिए 1
4 प्रजनन के उपरांत 4-5 सप्ताह तक डिपिंग नहीं करानी चाहिए 1
5 डिपिंग से पूर्व भेड़ को पानी अवश्य पिला देना चाहिए अन्यथा प्यासी भेड़, कीटनाशन युक्त पानी को पीकर बीमार अथवा मर सकती है 1
6 गर्मियों में भेड़ को गर्मी से बचाने के लिए छायादार स्थान उपलब्ध कराना चाहिए 1
7 पीने के लिए स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना चाहिए 1

8 6 माह से पहले नर मेमनों का बधियाकरण उचित होता है 1
9 सभी भेड़ों में पहचान के लिए निशान लगाना चाहिए 1
10 समय-समय पर भेड़ों को सामूहिक दवापान पशु चिकित्सक के परामर्श पर कराते रहना चाहिए

भेड़ों के प्रमुख रोग

भेड़ों में रोग फैलने के कारण

1 एक विशेष क्षेत्र में पाली गयी भेड़ों में उस क्षेत्र के रोगों या बुरे प्रभवों को रोकने की शक्ति पैदा हो जाती है 1 वातावरण के बदलने से उनकी सहनशक्ति भी कम हो जाती है 1
2 यदि भेड़ों को सूखी भूमि में न चराया जाए, उन्हें खड़ा पानी पिलाया जाए व उन्हें गीली गन्दी जमीन पर रखा जाए तो उन पर रोगों का आक्रमण हो सकता है 1
3 एक दम भेड़ का चारा बदल देना, आवश्यकता से अधिक भेड़े पालना भी भेड़ों के जीवन के लिए खतरा है क्योंकि एक ही भूमि के टुकड़े पर अधिक संख्या में भेड़े चराने से वहां की उपयोगी घास तो खत्म होगी है बल्कि बाह्या व आंतरिक परजीवियों की संख्या भी कई गुणा हो जाएगी 1
4 परजीवियों के आक्रमण व नमी के वातावरण के कारण भेड़ों में कई प्रकार के रोग लगे रहते है 1

रोगी भेड़ की पहचान

अन्य पशुओं की भांति भेड़ों में रोग के लक्षण इतनी आसानी से पता नहीं चल पाते कयोंकि स्वास्थ्य खराब होने पर भी भेड़ झुंड में चलती रहती है 1 जब भेड़ों का झुंड जा रहा हो और उसमें यदि कोई भेड़ शिथिल/सुस्त सी पिछड़ी हुई दिखाई दे तो उसे तुरन्त चिकितसा सहायता उपलब्ध करवानी चाहिए 1 इसके इलावा भेड़ झुंड से पिछड़ कर बैठ जाए, छाया में खड़ी हो जाए तथा खाना छोड़ दे तो उसे कोई बीमारी हो गई है ऐसा पता चलता है 1

बाह्या परजीवीयों द्वारा फैलाए जाने वाले रोग :

भेड़ के शरीर पर व उसके पेट में कई तरह के कीड़े होते है जो उसका खून चूसते रहते हैं और उनको कमजोर कर देते हैं जिसके कारण भेड़ों में अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होने लग जाती है व उसका वनज व उत्पादन भी कम हो जाता है 1 चीचडी व जूं आदि भेड़ की शरीर पर पाए जाने वाले प्रमुख बाह्या परजीवी है 1 ये दोनों परजीवी उन स्थानों पर ज्यादा होते हैं जहां मौसम गर्म व नही वाला हो 1 यह परजीवी भेड़ की खाल में खुजली पैदा करते हैं जिसके कारण ऊन को नुकसान पहुंचता है 1 इस कीड़ों को मारने के लिए भेड़ों को दवाई युक्त पानी से साल में दो बार नहलाना चाहिए 1 इस विधि को डिपिंग कहते हैं 1 डिपिंग के लिए बूटौक्स या डी0डी0टी0 का प्रयोग किया जाता है डिंपिग के लाभ व फायदे इस प्रकार से है :-

भेड़ों की डिपिंग

इस विधि के तहत भेड़ों को दो मिनट तक रसायन में डुबोकर नहलाया जाता है 1 इससे उनसे चिपके गोबर, कीचड़ और भेड़ों के परजीवी को नष्ट किया जा सके 1 भेडों को वर्ष में कम से कम एक बार डिपिंग जरूर करना चाहिए 1

लाभ :-

- जूं और टिक आदि बाह्या परजीवी मर जाते है 1
- खाज समाप्त हो जाती है और अन्य स्वस्थ भेड़ उस बीमारी से बच जाती है 1
- भेड़ ब्लो मक्खियों के प्रभाव से बच जाती है 1
- ऊन काटने से पहले डीप करने से मिट्टी, गोबर तथा उसमें फंसे कांटे तथा गंदगी निकल जाती है

सावधानियां :-

- डिपिंग के लिए भेड़ों को साफ जल में डीप कराया जाना चाहिए 1 डिप करने के बाद भेड़ की हालत में सुधार आ जाता है 1
- अक्तुबर और अप्रैल में ऊन काटने से पहले डिप करना चाहिए 1 यदि बाह्या पजीवी अधिक हों, तो भेड़ को ऊन काटने के एक माह बाद भी डिप करना चाहिए, क्योंकि तब तक त्वचा के जख्म भर जाते हैं 1
- तीन माह से अधिक ग्याभिन भेड़ को डिप करना चाहिए 1 यदि डिप करना आवश्यक हो, तो उन्हे छोटे समूह में रख कर बहुत सावधनी के साथ डिप करना चाहिए 1
- वर्षा के दिनों में डिप नहीं करना चाहिए, क्योंकि डिप घोल वर्षा की वजह से ऊन से धुल जाता है 1 कभी कभी धुलने से बचाने के लिए डिप में इस्तेमाल होने वाले रसायन को तेल में मिला कर गर्म पानी में इमल्शन तैयार किया जाता है 1 इस विधि को वाटर प्रुफिंग डीप कहते हैं 1
- डिपिंग के पूर्व भेड़ को पानी पिलाना चाहिए ताकि वह डिप घोल को न पिए 1

- जिस भेडत्र के शरीर पर जख्म हों या बीमार हो, उसे डिप नहीं करना चाहिए 1 मेमनों और शीघ्र कुर्बान होने वाले नर भेड़ को भी डिप नहीं करना चाहिए 1
- बहुत तेज धूप में या बहुत ठडंक वाले दिनों में डिप नहीं करना चाहिए 1
- सांयकाल चार बजे तक डिपिंग समाप्त कर देनी चाहिए ताकि सूर्यास्त होने से पूर्व अंतिम डिप की गई भेड़ सूख जाए 1
- डिपिंग की तैयारी एक दिन पूर्व में कर दी जानी चाहिए और डिपिंग का कार्य सुबह से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए 1
- भेड़ को डिपिंग के लगभग 15-20 मिनट बाद तक ड्रेनिंग पेन में खडा करना चाहिए, ताकि घोल डिप टंकी में वापस आ जाए और भेड़ सूख जाए 1
- प्रजनन काल में नर भेड़ों को डिप नहीं करना चाहिए 1 इससे उनके शिशन के प्रभावित होने या चोट लगने का या जांघो के अंदर की त्वचा के जलने का भय बना रहता है 1
- डिप को तैयार करने तथा इस्तेमाल के बाद फेंकने के लिए डिप रसायन निर्माताओं के आदेशों का पालन करना चाहिए 1

आंतरिक परजीवीयों द्वारा फैलाए जाने वाले रोग :

भेड़ खेतो व चरागाहों में आंतरिक परजीवीयों से पीड़ित हो जाते है 1 यह परजीवी भेड़ के पेट में अपना घर बना कर भेड़ का खून चूसते है व भोजन पचाने की शक्ति को नष्ठ कर देते हैं 1 जैसे गोल कीड़े (क) पत्ती के समान चपटे भूरे रंग के कीड़े जिन्हें फैसियाला कहते हैं भेड़ के जिगर या पित वाहनियों में पाए जाते है 1ऐसे में भेड़ों की भूख कम हो जाती है व उन्हें इस्त लग जाते है 1 (ख) कुछ आंतरिक पजरीवी भेड़ों की श्वास नली व फेफड़ों में रहते है व वहां सूजन पैदा कर देते है 1 ऐसे में बीमार भेड़ खांसती रहती है व नाक से गाढा द्रव निकलता है 1 इस रोग के कारण भेड़ों की भूख कम हो जाती है 1 श्लेष्म शिल्लीयां पीली पड़ जाती है तथा कुछ जातियों में दोनों जबड़ों के बीच पानी की थैली बन जाती है 1

कुछ परजीवी भेड़ की त्वचा में घुस कर खुजली पैदा करते है 1 इस जगह से ऊन गिरनी शुरू हो जाती है व धीरे-2 यह रोग सारे शरीर में फैल जाता है 1

बीमारी की पहचानः- इसके लक्षणों द्वारा व समय-समय पर पशु की मेगनियों की जांच कर की जा सकती है 1

उपचारः- नजदीकी चिकित्सा संस्थान से पशु चिकित्सक की सलाह पर रोगी पशु को दवाई देनी चाहिए 1

बचाव :-

1 पशुओं का साथ, नमी रहित चरागाह में चराएं 1

2 ज्यादा संख्या में भेड़ों को एक ही छोटी चरागाह में न चराएं 1

3 स्वस्थ भेड़ों को बीमार भेड़ों से अलग रखें व स्वस्थ भेड़ों का खाना बीमार भेड़ों की मेगनियों से प्रभावित न हो 1

4 जिन चरागाहों में फिल्लो, केंचुओं आदि का प्रकोप ज्यादा हो उन जगहों पर भेड़ों को न चराएं 1

भेड़ों के संक्रामक रोग :-

भेड़ों में संक्रामक या छूत के रोग निम्नलिखित माध्यमों द्वारा फैल सकते हैं 1

संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए लाभकारी सुझाव :-

पी0पी0आर0 रोग

भेड़ों में पाए जाने वाले संक्रामक रोगों में पी0पी0आर0 रोग आजकल बहुत से भेड़ पालकों की नुकसान पहुंचा रहा है 1 इस रोग के बारे में जानकारी इस प्रकार से है 1

पी0पी0आर0 भेड़ एवं बकरियों में फेलने वाला विषाणुजनित घात संक्रामक रोग है, जो स्वस्थ भेड़-बकरियों/पशुओं में तेजी से संचारित होकर एक ही समय अधिकाधिक पशुओं को मार डालता है 1

कारण :- यह रोग विषाणु (मिक्सोवाइरस) समूह के द्वारा पैदा होता है 1

संचारण (प्रसार):- रोगी भेड़/बकरी दूषित आहार, पानी, मल-मूत्र आदि के सम्पर्क में आने से स्वस्थ पशुओं में यह रोग तेजी से फैलता है 1

समय :- पी0पी0आर0 पूरे वर्ष भेड़-बकरी को प्रभावित कर सकता है 1 परन्तु इसका प्रभाव जाड़ों में जब तापमान कम होता है तब अधिक होता है, क्योंकि तापमान कम होने के कारण भेड़-बकरी की चयापचया से उत्पन्न होने वाली शक्ति का प्रयोग शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में लग जाती है, जिससे भेड़-बकरी की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति कम हो जाती है 1

सामान्य लक्षण :- भेड़-बकरियों में तीव्र ज्वर 104-106 डिग्री फारेनहाईट के साथ रोग प्रारम्भ होता है 1 पशु सुस्त कमजोर, आहार के प्रति अरूचि, आंखे लाल, आंख/मुंह/नाक से पानी बहना आदि लक्षण दिखते है 1 ज्वर कुछ कम होते ही मुह के अन्दर मसूढ़ों व जीभ पर लाल-लाल दाने फूटकर घाव बनकर दिखाई देते हैं 1 जिनमें शीघ्र ही सड़न पैदा हो जाती है 1 आंखों से कीचड़ आने लगता है और तेज बदबूइार खून व आंव से मिश्रित दस्त आने लगते है 1 गर्भित पशुओं के गर्भ गिर जाते हैं 1 धीरे-धीरे दस्त की मात्रा व घावों में सड़न बढती है और पशु अत्याधिक सुस्त होकर मर जाता है 1

अवधि :- रोग के संक्रमण के चार से आठ दिन के भीतर रोगी भेड़-बकरी की मृत्यु हो जाती है 1 इससे प्रभावित भेड़ एवं बकरियों की मृत्यु दर 90 प्रतिशत तक हो सकती है 1 जो भेड़-बकरी बच जाते हैं उन्हे स्वस्थ होने में काफी समय लग जाता है 1

निइान :- प्राथमिक लक्षणों, शव परीक्षण तथा प्रयोगशालात्मक जांच द्वारा रोग का सही निदान निकटतम पशु चिकित्साधिकारी से सम्पर्क कर समय रहते किया जा सकता है 1

रोकथाम :- क्योंकि यह अत्यन्त घातक रोग है 1 अतः अपने स्वस्थ भेड़-बकरियों को बचाये रखने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए :

1 बाड़ों को साफ एवं सूखा रखें व कभी-कभी फिनायल/बुझा चूना का प्रयोग करें 1

2 दूषित भोजन व पानी न दें, प्रत्येक भेड़-बकरी को स्वच्छ व ताजा पानी दें 1

3 दूषित चारागाहों अथवा यदि कहीं आस-पास रोग की सम्भावना हो, वहां अपने भेड़ बकरी न जाने दें व पशुओं का आवागमन रोक दें 1

4 बाहर से आये या नये खरीदे गए पशुओं को 15-20 दिन अलग रखने के बाद ही अपने स्वस्थ पशु समूह में मिलायें 1

5 संदिग्ध रोगी भेड़-बकरी को तत्काल अलग कर उसकी चिकित्सा व देखभाल करायें 1

6 रोग से मृत पशु को कम से कम दो मीटर गहरे गड्ढे में बुझे चूने/नमक के साथ दबा दें अन्यथा मृत स्थान पर ही जला दें 1

7 दूषित मांस का सेवन न करें 1

8 रोगी भेड़-बकरी से सम्पर्क में आई हुई वस्तुओं-चारा, पुआल, रस्सी आदि को लजा दें 1 जंजीद, बर्तन आदि को पानी में उबालने/पोटेशियम परमैग्नेट के घोल से धोने के बाद ही प्रयोग करें 1

9 मृत पशु के बाड़े/स्थान को भली प्रकार से सफाई-पुताई एवं फिनायल/चूना के प्रयोग के एक-दो दिनों बाद ही प्रयोग में लायें 1

टीकाकरण:- इस बीमारी की रोकथाम हेतु नियमित रूप से स्वस्थ भेड़-बकरियों/पशुओं को 6 माह की आयु पर निकटतम पशु चिकित्सालय/पशु सेवा केन्द्र/भेड़ एवं ऊन प्रसार केन्द्र के माध्यम से पशुपालन विभाग द्वारा उपलब्ध करायी गई वैकसीन से वर्ष में एक बार टीकाकरण अवश्य करवायें 1

इसके इलावा हि0प्र0 में पाए जाने वाले प्रमुख संक्रामक रोग है :- टिटनस, मुहं-खुर रोग, लंगड़ा बुखार, फुट रोट, एन्टरोटौक्सीमिया, निमोनिया आदि 1

संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण सारणी

टीकाकरण विधी से संक्रामक रोगों द्वारा होने वाली हानि से बचा जा सकता है 1 प्राय: संक्रामक रोगों का प्रकोप कुछ विशेष मौसम जैसे वर्षाकाल मे होता है इसलिए वर्षाकाल से पहले टीकाकरण करवा लेना चाहिए 1 पशु पालन विभाग अपने विभिन्न पशु स्वास्थ्य संस्थानों के माध्यम से भेड़ पालकों को मुफत टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध करवाता है 1

टीकाकरण सारणी :-

मुंह खुर बीमारी	बरसात से पहले	6 महीने बाद
एन्टेरोटोक्सीमियां	बरसात से पहले	एक साल बाद
पी0पी0आर0	बरसात से पहले	एक साल बाद

भेड़ों में रोग फैलने के कारण

1 एक विशेष क्षेत्र में पाली गयी भेड़ों में उस क्षेत्र के रोगों या बुरे प्रभवों को रोकने की शक्ति पैदा हो जाती है 1 वातावरण के बदलने से उनकी सहनशक्ति भी कम हो जाती है 1

2 यदि भेड़ों को सूखी भूमि में न चराया जाए, उन्हें खड़ा पानी पिलाया जाए व उन्हें गीली गन्दी जमीन पर रखा जाए तो उन पर रोगों का आक्रमण हो सकता है 1

3 एक दम भेड़ का चारा बदल देना, आवश्यकता से अधिक भेड़े पालना भी भेड़ों के जीवन के लिए खतरा है क्योंकि एक ही भूमि के टुकड़े पर अधिक संख्या में भेड़े चराने से वहां की उपयोगी घास तो खत्म होगी है बल्कि बाह्या व आंतरिक परजीवियों की संख्या भी कई गुणा हो जाएगी 1

4 परजीवियों के आक्रमण व नमी के वातावरण के कारण भेड़ों में कई प्रकार के रोग लगे रहते है 1